<u>यीशु क्यों मरा?</u>

आप में से कितनों के पास मित्र या रिश्तेदार हैं जो अपने गले में गिलोटिन (सिर काटाने का एक प्रकार का यंत्र) की प्रतीमा पहनते हैं? या शायद एक बिजली की कुर्सी? बेतुका सुनाई पड़ता है ना? परन्तू कितनी बार हमारा सामना ऐसे लोगों से होता है जिनके गले में क्रूस होता है। हमें आदत पड़ चुकी है लोगों के गले में क्रूस देखने की, कि हम इस बारे में सोचते ही नही कि क्रूस, गेलोटिन या बिजली की कुर्सी के जैसे वध करने का तरीका था। लोग क्रूस क्यों पहनते हैं? अब तक हुई खोजों में क्रूस जान से मारने का सबसे क्रूर तरीका था।

यहाँ तक की रोमी लोगों ने जो अपने मानव अधिकार के लिए नहीं जाने जाते ३३७ ईसवी में क्रूस की सज़ा को बर्बर समझते हुए खत्म कर दिया। फिर भी क्रूस को हमशा मसीही विश्वास के चिह्न के रूप में समझा गया है। सुसमाचारों का अधिकांश भाग यीशु के मृत्यु के बारे में है। बाकी नए नियम का अधिकांश भाग इस बात को समझाने के बारे में है कि क्रूस पर क्या हुआ था।

जब प्ररित पौलूस कोरिन्थ गए उन्होंने कहा, "**क्योंकि मैं ने यह ठान लिया था, कि तुम्हारे बीच यीशु मसीह, वरन क्रूस पर चढ़ाए हुए मसीह को छोड़ और किसी बात को न जानूं।**" – (१ **कुरिन्थियों** २:२) जब हम विंस्टन चर्चिल, रॅनल्ड रेगन, महात्मा गाँधी या मर्टिन लूथर किंग के विषय में सोचते हैं तो हम यह सोचते हैं कि उन्होंने अपने जीवन में क्या किया, और उसके द्वारा उन्होंने समाज को कैसे प्रभावित किया? लेकिन जब हम नया नियम पढ़ते हैं तो यीशु के जीवन से बढ़कर उसकी मृत्यु के बारे में पढ़ते हैं। यीशू, जिसने किसी और मनुष्य से बढ़कर संसार के इतिहास का चेहरा बदल दिया, उसे ज़्यादा उसके जीवन के लिए नहीं परन्तु उसकी मृत्यु के लिए याद किया जाता है। यीशु की मृत्यु पर इतना ज़ोर क्यों हैं? उसकी मृत्य और राजकुमारी डायना, या फिर कोई और शहीद (martyr) या युद्ध के वीरों की मृत्यु के बीच में क्या अन्तर है? वह क्यों मरा? उससे क्या मिला? बिइबिल का क्या अर्थ है जब नया नियम बताता है कि यीशु हमारे पापों के लिए मरा? यह कुछ प्रश्न हैं जिनका उत्तर आज हम अपने अधिवेशन में देना चाहते हैं।

समस्या

जब मैं जवान था, मैं व्यक्तिगत रीति से लोगों से बहुत बातचीत किया करता था, उनसे परमेश्वर के साथ उनके सम्बन्ध के बारे में पूछता था इस बात की आशा लगाते हुए कि उन्हें बता सकूँ कि यीशु ने उनके लिए क्या किया है। अकसर वे मुझे बताते हैं कि उन्हें मसीह की कोई ज़रूरत नहीं है, कि उनका जीवन भरपूर, सम्पूर्ण और खुश है। वे कहते हैं, "मैं अच्छा जीवन जीने की कोशिश करता हूँ और यह सोचता हूँ कि जब मैं मरूँगा तब शायद ठीक ही रहुँगा, क्योंकि मैंने अच्छा जीवन जिया है"। वास्तव में वे यह कह रहे हैं कि उन्हें उद्धारकरता की कोई आवश्यकता नहीं है क्योंकि वे समझ नहीं पाते कि उन्हें किसी चीज़ से बचाया जाना है। उद्धारकर्ता के लिए कोई सराहना और प्रेम नहीं है क्योंकि उन्हें कभी भी पवित्र परमेश्वर के सम्मुख उनके व्यक्तिगत दोष और विद्रोह से चेताया नहीं गया। फिर भी हम सबकी एक समसया है:

इसलिये कि सब ने पाप किया है और परमेश्वर की महिमा से रहित हैं। रोमियो ३:२३

मुझे आपके बारे में नहीं पता लेकिन मुझे यह कहने में बहुत कठिनाई होती है, "मैं गलत था, कृपया मुझे क्षमा करें"। मैं दूसरों पर दोष लगाने में बहुत जलदी करता हूँ और यह स्वीकार करने में कि मैं गलत हूँ बहुत देर लगाता हूँ। मेरी पत्नी जानती हैं कि युवा के तौर पर समुंद्र पर कई साल रहने के कारण दिशा के बारे में मेरी समझ बहुत अच्छी है। आप सूरज की दिशा के द्वारा मार्गनिर्देशन करना सीख जाते हैं। पर हर बार मैं गड़बड़ कर देता हूँ और देखता हूँ कि मैं उत्तर की ओर जा रहा हूँ जबकी मैंने सोचा कि मैं पश्चिम की ओर जा रहा था। पर मेरे लिए बहुत कठिन है यह स्वीकार करना कि मैं गलत था। क्या किसी और को भी यह कहना मुशकिल लगता है कि वह गलत था?

यदि हम सच्चे हैं तो हम सबको यह मान लेना चाहिए कि हम वह काम करते हैं जो हम जानते हैं कि गलत हैं। बहुत से लोग इस सच्चाई को स्वीकार ही नहीं कर सकते कि वह दोषी हैं, ज़रा से भी दोषी। यह असमान्य घटना हमारे ध्यान में गंभीरता से तब लायी जाती हैं जब लोग अपनी गाड़ी दुर्घटना का दावा पत्र भरते हैं। यह एक सिद्ध उदाहरण है इस बात का कि लोग ज़िम्मेदारी का हल्का सा अंश भी नहीं स्वीकार कर पाते। जैसे कि निम्लिखित बातें बताती हैं कि कुछ गाड़ी–चालक इस बात पर ज़ोर देते हैं कि दोष दूसरों का है जबकि गलतियाँ अकसर उन्हीं की होती हैं। यहाँ पर 'कोई जीत नहीं कोई शुल्क नहीं' से कुछ और उदाहरण हैं।

- "मैं दोनो में से किसी भी गाड़ी पर दोष नहीं लगाता लेकिन यदि दोनो में से किसी का दोष है तो वह दूसरी वाली का है।"
- "बिजली के तार का खंभा तेज़ी से आ रहा था। मैंने एकदम से उसके रास्ते से हटने की कोशिश की जब वह मेरी गाड़ी के सामनेवाले हिस्से से टकरा गया।"
- "वह व्यक्ति पूरी सड़क पर चल रहा था। मुझे कई बार गाड़ी रास्ते से घुमाकर हटानी पड़ी, इससे पेहले कि मैंने उसे टक्कर मारी।"
- "एक न दिखाई देनेवाली (अनदेखी) गाड़ी पता नहीं कहाँ से आई, मेरी गाड़ी को टक्कर मारी और गायब हो गयी।"
- "दूसरी ओर से आनेवाले ठहरे हुए ट्रक से मेरी टक्कर हो गई।"
- घर आते हुए मैंने गाड़ी गलत घर में घुसा दी और उस पेड़ से टकरा दी जो मेरे घर में नही है।"
- "४० साल से मैं गाड़ी चला रहा था जबकि मैं चलाते हुए सो गया और दुर्घटना हो गयी।"

चाहे जिसने भी यह कथन अपने दावा पत्र में कहा, यह बहस करने लायक है कि क्या एक शोचालय, एक मकैनिक या एक अंग्रेज़ी शिक्षक, कौन सबसे अच्छा कारण बता सकता है। मैं इसका निर्णय आप पर छोड़ता हुँ:

- "पेट की खाराबी के कारण मैं डॉक्टर के पास जा रहा था कि अचानक डायरिया होने के कारण दुर्घटना हो गयी।

लोगों को उद्धारकर्ता की ज़रूरत समझाने के लिए हमें वापस लौटना होगा और सबसे बड़ी समस्या को देखना होगा जिससे इस संसार के प्रत्येक व्यक्ति का समाना होता है। समस्या यह है कि हम सबने पाप किया है और परमेश्वर की महीमा से रहित हैं। एक बार, जब मैं सड़क पर अजबनियों से उनके विश्वास के बारे में बात कर रहा था तो एक व्यक्ति ने बताया कि जब वह अपने जीवन के अंत की ओर पहुँचेगा तो उसका हिसाब ठीक रहेगा क्योंकि उसने हवाई जहाज़ के फटने से पहेले दो लोगों को बाहर निकाल कर उनकी जान बचाई थी। जब मैंने उससे पूछा कि वह अपने आप के विषय में क्या करेगा तो उसने कहा कि उसने कभी पाप नही किया। वह इस सोच को लेकर धोखे में था कि नैतिक तौर पर वह बहुत से लोगों से अच्छा है

और यह कि न्याय के दिन उसका हिसाब ठीक होगा जब परमेश्वर सब लोगों से उन कामों का लेखा लेगा जो उन्होंने किए हैं। (**रोमियो** १४:१२)

बहुत से लोग दूसरों का जीवन देखकर अपना न्याय करते हैं। मुझे इसका मतलब समझाने दीजिए: यदि मैं यह कहूँ कि यह दीवार उन लोगों का पैमाना दर्शाती है जो अब तक जिए हैं और सबसे बुरा व्यक्ति सबसे नीचे है और दीवार में सबसे ऊपर सबसे श्रेष्ठ और सबसे धर्मी लोग हैं। सबसे नीचे आप किसको रखेंगें? बहुत से कहेंगे एडोल्फ़ हिट्लर, जोसफ स्टालिन, या शायद सद्दाम हुसैन या उनका बॉस। आप सबसे ऊपर किसे रखेंगे? शायद आप कहेंगें मदर टेरीसा, राजकुमारी डायना, मर्टिन लूथर किंग या बिलि ग्राहम। मैं समझता हूँ कि आप सब सहमत होंगे कि हम सब दीवार पर कहीं न कहीं होंगे – कीथ टॉमस कहीं नीचे होंगे और शायद आप कहीं ऊपर होंगे। तो, आप क्या समझते हैं कि स्तर क्या है? शायद हम में से बहुत से लोग यह उत्तर देंगे कि छत स्तर होना चाहिए यह देखते हुए कि सबसे उत्तम मानवता तो ऊपर है। परन्तु बिइबिल इसे स्तर नहीं मानती। जो भाग हमने अभी देखा, रोमियों ३:२३ में बाइबिल बताती है कि जो स्तर है वह परमेश्वर की महीमा है, जो यीशु मसीह है – जीने के लिए परमेश्वर का महिमामय आदर्श। स्तर इस कमरे की छत नही परन्तु आसमान है। हम में से कोई भी परमेश्वर की धार्मिकता – यीशु मसीह तक नहीं पहुँचा है। पाप का अर्थ यही है कि हम सब लक्ष्य से चूँक गए हैं – स्तर तक न पहुँचना। यदि हम अपनी तुलना लुटेरों, बच्चों का शोषण करनेवालों या अपने पड़ोसियो से करें तो हम अपने आपको बहुत अच्छा समझेंगें। लेकिन जब हम अपनी तुलना यीशु मसीह से करते हैं तब हम देखते हैं कि हम कितने कम हैं।

सोमरसेट मौहम ने एक बार कहा, "यदि मैं वह हर विचार जो कभी मैंने सोचे हैं और हर वह कार्य जो भी कभी मैंने किया है लिखूँ तो लोग मुझे अनैतिकता का राक्षस कहेंगे।"

पाप मुख्यतः परमेश्वर के प्रति विद्रोह है (उत्पत्ति ३) और उसका परिणाम यह है कि हम उससे अलग हो गए हैं। उड़ाऊ पुत्र के समान (लूका १५) हम अपने पिता के घर से दूर, और अपने जीवन को गड़बड़ी में पाते हैं। कुछ लोग कहेंगें, "अगर हम सब एक ही नाव में सवार हैं तो क्या इससे कोई फ़र्क पड़ता है?" उत्तर है, हाँ इससे सचमुच फ़र्क पड़ता है हमारे जीवन में पापों के परिणाम के कारण जिनका चार शीर्षकों में सार दिया जा सकता है – पाप की गंदगी, पाप की ताकत, पाप की सज़ा और पाप का विभाजन।

१) पाप की गंदगी

फिर उस ने कहा; जो मनुष्य में से निकलता है, वही मनुष्य को अशुद्ध करता है। क्योंकि भीतर से अर्थात मनुष्य के मन से, बुरी बुरी चिन्ता, व्यभिचार। चोरी, हत्या, पर स्त्रीगमन, लोभ, दुष्टता, छल, लुचपन, कुदृष्टि, निन्दा, अभिमान, और मूर्खता निकलती हैं। ये सब बुरी बातें भीतर ही से निकलती हैं और मनुष्य को अशुद्ध करती हैं॥ (मर्कुस ७:२०–२३)

शायाद आप कहेंगे, "मैं इनमें से अधिकांश बातें नहीं करता, "लेकिन इनमें से एक ही हमारे जीवन को बिगाड़ने के लिए काफ़ी है। हम एसा सोच सकते हैं कि दस आज्ञाएँ काश एक परीक्षा पर्चे की तरह होती जिसमें से हमे कोई भी तीन करने होते। लेकिन नया नियम बताता है कि यदि हम व्यवस्था का कोई भी एक भाग तोड़ते हैं तो हम सारी व्यवस्था तोड़ने के दोषी हैं। (याकूब २:१०) एक पाप काफ़ी है आपके जीवन को प्रदूषित करने के लिए और आपके स्वर्ग की सिद्धता से रोकने के लिए। यह सम्भव नहीं है, उदहारण के लिए कि आप अनुभवी वाहन चालक हैं। या तो वह अच्छा है या नहीं। गाड़ी चलाने में एक गलती उसे स्वच्छ

रिकॉर्ड होने से रोक सकती है। या फिर तेज़ी से गाड़ी चलाने के लिए जब एक पुलिसवाला आपको रोकता है तब आप उसको यह नही बोल सकते कि आपने और कोई नियम नहीं तोड़ा और आशा नहीं लगाते कि आप बच जएँगें। एक यातायात उलाहना का अर्थ है कि आपने नियम तोड़ा है। ऐसा ही हमारे साथ है। एक गलती हमारे जीवनों को अशुद्ध करती है। उदाहरण के लिए, एक खूनी होने के लिए आपको कितने खून करने होते हैं? केवल एक, बिलकुल; झूठा बनने से पहले कोई व्यक्ति कितना पाप करता है? फिर से, उत्तर केवल है एक , एक अपराध हमारे जीवनों को अशुद्ध कर देता है।

२) <u>पाप की ताकत</u>

यीशु ने उन को उत्तर दिया; मैं तुम से सच सच कहता हूं कि जो कोई पाप करता है, वह पाप का दास है। (यहुन्ना ८:३८)

जो गलत काम हम करते हैं उनके पास हमें अपने वश में करने की ताकत होती है। जब मैं नशा करता था कई बार मैं इस बात को जानता था कि वह किस तरह से मेरे जीवन को नाश कर रहा था लेकिन मेरे जीवन पर उसकी पकड़ थी। मैंने दो–तीन बार उन्हें फेंकने की कोशिश की लेकिन हमेशा लौटकर और अधिक खरीद कर ले आता था। लोग आपको बतायेंगे कि चरस–गाँजा में आदी करने की ताकत नहीं होती लेकिन मैंने ऐसा नहीं पाया। जब तक मैंने अपना जीवन मसीह को नहीं दिया तब तक मैं आज़ाद नहीं हो सका। यह भी स्वभाव है कि हम नशे, या भयंकर क्रोध, ईर्षा, हेकड़ी, घमण्ड, स्वार्थीपन, निन्दा या व्यभिचार के आदी हों। हम अपने सोच में या व्यवहार के तरीकों के भी आदी हो सकते हैं, जिसे हम अपने आप तोड़ नहीं सकते। यह वह दासत्व है जिसके विषय में यीशु कहता है। जो काम हम करते हैं, जिन पापों में हम अपने आपको शामिल करते हैं, उनमें ताकत होती है हमें अपना दास बनाने की।

लिवरपूल के पूर्व बिशप जे० सी० राय्ल ने एक बार लिखा था–

हर एक और सारे (पापों) के बहुत से दुःखी बंधक होते हैं जो पूरी तरह से अपनी बेड़ियों में जकड़े हुए हैं, दुर्दशा में पड़े बंधक..... कई बार घमण्ड करते हैं कि वे प्रत्यक्ष रूप से स्वतंत्र हैं ... ऐसा कोई दासत्व नहीं है। वास्तव में पाप, सब दुर्दशा और निराशा, अंत में हताशा और नरक – केवल यही वह मज़दूरी है जो पाप अपने सेवकों को देता है।

३) <u>पाप की सज़ा</u>

क्योंकि पाप की मजदूरी तो मृत्यु है, परन्तु परमेश्वर का वरदान हमारे प्रभु मसीह यीशु में अनन्त जीवन है॥ (रोमियो ६:२३)

एक बात जो अकसर मुझे प्रार्थना के लिए प्रेरित करती है वह है समाचार। जब मैं ऐसी माँ के बारे में सुनता हूँ जो दुर्व्यवहार करती है तो मैं न्याय माँगता हूँ। जब मैं ट्रैफ़िक जाम (यातायात अवरोध) में फँस जाता हूँ और कारें वहाँ से तेज़ी से निकलती हैं जहाँ केवल पुलिस और कर्षण वाहन जा सकते हैं तो मैं गुस्सा होता हूँ और कामना करता हूँ कि वे पकड़े जाएँ। परन्तु जब मुझे काम के लिए देरी होती है और मैं अत्याधिक तेज़ गाड़ी चलाता हूँ ताकी समय पर कर्मचारीयों की बैठक के लिए पहुँच सकूँ तब मैं चाहता हूँ कि पुलिसवाला मुझे जाने दे। मैं समझता हूँ कि मैं एक पाखाण्डी हूँ। हमारा सोचना उचित है कि पापों की सज़ा मिलनी

चाहिए। नियम हमारी मदद के लिए हैं ताकी हम अपने जीवन को सही रीति से जी सकें। जो लोग पाप करते हैं उन्हें उनके पापों की सज़ा मिलनी चाहिए। पाप मज़दूरी कमाएगा जैसे हमारे कार्य को हफ़्ता– दर – हफ़्ता मज़दूरी चाहिए। हमारा नियोक्ता उस आधार पर हमें वह देगा जिसके हम लायक हैं – हमारी मज़दूरी। इसी प्रकार, परमेश्वर को भी, अपने न्याय में, हमको वह मज़दूरी देनी चाहिए जिसके हम पापी जीवन के द्वारा योग्य हैं अनन्तकाल के लिए परमेश्वर से अलगाव, जिसे बिइबिल नरक कहती है। पाप की मज़दूरी मृत्यु है।

४) <u>पाप का विभाजन</u>

सुनो, यहोवा का हाथ ऐसा छोटा नहीं हो गया कि उद्धार न कर सके, न वह ऐसा बहिरा हो गया है कि सुन न सके; परन्तु तुम्हारे अधर्म के कामों ने तुम को तुम्हारे परमेश्वर से अलग कर दिया है, और तुम्हारे पापों के कारण उस का मुँह तुम से ऐसा छिपा है कि वह नहीं सुनता। (यशायाह ५९:१–२)

जब पौलुस कहता है कि पाप की मज़दूरी मृत्यु है तो वह केवल शारीरिक मृत्यु के बारे में नहीं कहता। यशायाह भविष्यद्वक्ता कहता है कि पाप हमें परमेश्वर से अलग करता है। यह आत्मिक मृत्यु है जिसका परिणाम है परमेश्वर से अनन्तकाल के लिए अलग हो जाना। परमेश्वर से यह अलगाव वह चीज़ है जिसका अनुभव हम इस जीवन में करते हैं। अपने पापों के परीणामस्वरूप हम में से हर एक जन ने अपने आपको परमेश्वर से दूर पाया है लेकिन यह तब भी सच्चाई रहेगी जब हम मृत्यु से पार होकर वस्तविक जीवन में प्रवेश करेंगे जो इस संसार से परे है। जो गलत कार्य हम करते हैं वह इस रुकावट का कारण हैं।

समाधान

हम सबको एक उद्धारकरता की आवश्यकता है जो हमें हमारे जीवनों में पापों के परीणाम से बचाए। इंगलैंड में प्रमुख शासानाधिकार क्लेश्फ़र्न के लॉर्ड मकै ने लिखा था–

> "हमारे विश्वास का मुख्य केन्द्र हमारे प्रभु यीशु मसीह के द्वारा क्रूस पर हमारे पापों के लिए अपने आपका बलिदान है... जितनी गहराई से हम अपनी ज़रूरत को समझेंगे, उतना ही अधिक हम प्रभु यीशु मसीह से प्रेम करेंगे और इस कारण से उसकी सेवा करने की हमारी इच्छा बहुत प्रबल होगी।"

मसीहत का शुभ संदेश यह है कि परमेश्वर ने देखा है कि हम सब मुशकिल परिस्थिति में हैं और उसने समसया का समाधान करने के लिए कदम उठाए हैं। उसका समाधान यह है कि हम सबके लिए विकल्प बन जाए। परमेश्वर स्वयं जो मसीह है, यीशु के रूप में आया हमारा स्थान लेने के लिए। कुछ ऐसा, जिसको कई किताबों के लिखने वाले जॉन स्टॉट "परमेश्वर का स्वयं–विकल्प", कहते हैं। प्रेरित पौलुस इसको इस तरह से बताते हैं –

वह आप ही हमारे पापों को अपनी देह पर लिए हुए क्रूस पर चढ़ गया जिस से हम पापों के लिये मर कर के धामिर्कता के लिये जीवन बिताएं: उसी के मार खाने से तुम चंगे हुए। (१ पतरस २:२४)

१) परमेश्वर का स्वयं–विकल्प

स्वयं–विकल्प का अर्थ क्या है? अपनी पुस्तक "मिरेकल ऑन द रिवर क्वाइ",में अर्नेसट गॉरडन युद्ध के बंधको के एक समुह की सच्ची कहानी बताते हैं जो कि द्वितीय विश्वयुद्ध के समय बर्मा रेलवे पर काम कर रहे थे। हर दिन के अन्त में काम करनेवालों से औज़ार ले लिए जाते थे। एक अवसर पर, एक जापानी पहरेदार चिल्लाया कि एक बेलचा खो गया है और जानना चाहता था कि किस व्यक्ति ने उसे लिया है। वह ज़ोर से हल्ला मचाने और चिल्लाने लगा और उसने आग बबूला होकर यह आदेश दिया कि जो कोई भी दोषी है वह सामने आए। कोई नहीं हिला। अपनी बन्दूक कैदियों पर तानते हुए वह ज़ोर से चिल्लाया, "सब मरेंगे, सब मरेंगे"। उस क्षण एक आदमी सामने निकलकर आया और पहरेदार ने अपनी बन्दूक से उसे मौत के घाट उतार दिया जबकि वह चुपचाप सावधान की मुद्रा में खड़ा था। जब वे कैंप वापस लौटे फिर से औज़ार गिने गएऔर कोई भी बेलचा लापता नही पाया गया। वह एक व्यक्ति विकल्प बनकर औरों को बचाने के लिए आगे चला गया था। इसी प्रकार से यीशु आगे आया और हमारे बदले मर कर उसने न्याय को तृप्त किया।

२) क्रूस की पीड़ा

यीशु हमारा विकल्प था। उसने हमारे लिए क्रूस की मौत सही। सिसेरो ने बताया कि क्रूस पर लटकाया जाना "सताने का सबसे क्रूर और घिनौना तरीका था।" यीशु के कपड़े उतार दिए गए और उसे एक टिकठी से बाँध दिया गया। उसको चमड़े के चार या पाँच पेटीयों से जो धारदार तेढ़ी–मेढ़ी हड्डी और सीसे से जुड़ा हुआ था, मारा–पीटा गया। तीसरी शताब्दी के इतिहासकार एसेबीयस ने रोमी कोड़े मारने के तरीके का वर्णन इस प्रकार किया "पीड़ा उठानेवाले जन की नसें नंगी होती थी, और प्रताड़ित जन की माँसपेशियाँ, नसें और अंतड़ियाँ खुले ज़खम बन जाते थे।" फिर उसे किले के भीतर ले जाया गया, बंद किले के अंदर रोमी आंगन जहाँ सिर में काँटों का ताज धसाया गया। ६०० लोगों की सेना की टुकड़ी द्वारा उसका ठट्टा उड़ाया गया। फिर उससे ज़बर्दस्ती खून से लथपथ कंधों पर एक भारी क्रूस उठाया गया तब तक,जब तक कि वह थक कर गिर न गया और शिमौन कुरैनी से ज़बर्दस्ती उसका क्रूस उठवाया गया। जब वे क्रूस पर चढ़ाए जाने के स्थान पर पहुँचा, वहाँ फिर से उसे निर्वस्त्र किया गया। उसको क्रूस पर लिटा दिया गया जहाँ बिलकुल कलाई के ऊपर ६ इंच की कील उसके हाथों में गड़ाई गईं। उसके घुटनों को एक तरफ़ घुमा दिया गया ताकी टखनों को पिंडली की हड्डी और स्नायुजाल के बीच कील से गाड़ा जा सके।

उसे क्रूस पर उठाया गया जिसे फिर ज़मीन पर बने गड्ढे में धँसाया गया। वहाँ उसे बेहद गर्मी और असहनीय प्यास के साथ भीड़ का तमाशा होने के लिए टंगा हुआ छोड़ दिया गया। छह घंटे ऐसे दर्द के साथ लटकता छोड़ दिया गया जबकि उसका जीवन धीरे–धीरे खतम हो रहा था। फिर भी सबसे भयंकर बात शारीरिक दुःख नहीं था, न ही संसार द्वारा ठुकराए जाने का और दोस्तों द्वारा छोड़ दिए जाने का भावनात्मक दुःख था बल्कि हमारे लिए पिता से अलग होने की आत्मिक पीड़ा थी – जबकी वह हमारे पापों को अपने ऊपर ले रहा था।

आपके पाप का उचित मूल्य चुका कर, क्रूस पर यीशु के पूर्ण कार्य के कारण परमेश्वर अब उन्हें पूरी रीति से क्षमा दे सकता है जो उसे पाना चाहें। प्रभु दिखाता है कि वह पीड़ा से अनजान नहीं है। जितना हमें मिलना

चाहिए था उसने स्वयं सारा और हमसे बढ़कर अपने ऊपर ले लिया है। वह हमारे बदले और हमारे लिए मर गया। क्रूस पर परमेश्वर ने हमरे लिए अपना प्रेम प्रकट किया।

क्योंकि परमेश्वर ने जगत से ऐसा प्रेम रखा कि उस ने अपना एकलौता पुत्र दे दिया, ताकि जो कोई उस पर विश्वास करे, वह नाश न हो, परन्तु अनन्त जीवन पाए। (यहुन्ना ३:१६)

परिणाम

वचन हमें चार तस्वीरें देता है इस बारे में कि यीशु ने हमारे लिए क्रूस पर क्या किया है –

पर अब बिना व्यवस्था परमेश्वर की वह धार्मिकता प्रगट हुई है, जिस की गवाही व्यवस्था और भविष्यद्वक्ता देते हैं। अर्थात परमेश्वर की वह धार्मिकता, जो यीशु मसीह पर विश्वास करने से सब विश्वास करने वालों के लिये है; क्योंकि कुछ भेद नहीं। इसलिये कि सब ने पाप किया है और परमेश्वर की महिमा से रहित हैं। परन्तु उसके अनुग्रह से उस छुटकारे के द्वारा जो मसीह यीशु में है, सेंत मेंत धर्मी ठहराए जाते हैं। उसे परमेश्वर ने उसके लोहू के कारण एक ऐसा प्रायश्चित्त ठहराया, जो विश्वास करने से कार्यकारी होता है, कि जो पाप पहिले किए गए, और जिन की परमेश्वर ने अपनी सहनशीलता से आनाकानी की; उन के विषय में वह अपनी धार्मिकता प्रगट करे। वरन इसी समय उस की धार्मिकता प्रगट हो; कि जिस से वह आप ही धर्मी ठहरे, और जो यीशु पर विश्वास करे, उसका भी धर्मी ठहराने वाला हो। (रोमियो ३:२१–२६)

१) पहली तस्वीर मंदिर से है।

"उसे परमेश्वर ने उसके लोहू के कारण एक ऐसा प्रायश्चित्त ठहराया" (पद २५)

पुराने नियम में इस विषय में कि किस प्रकार पाप से निपटा जाए बहुत ही सोच–समझकर नियम बनाए गए थे। बलिदानों की एक पूरी प्रणाली थी जो पाप की गंभीरता और उससे पवित्रीकरण की ज़रूरत को दर्शाती थी। एक विशिष्ट मामले में एक पापी जन एक पशु लेता। उस पशु को जितना हो सके उतना सिद्ध और निर्दोष होना था। पापी जन उस पर अपना हाथ रखता और अपने पापों का अंगीकार करता। यह इस प्रकार से देखा जाता कि पाप मनुष्य से हटकर पशु पर चला गया है, जिसे फिर मार दिया जाता। यह केवल हमारे लिए तस्वीर थी कि पाप का अर्थ मृत्यु है और इससे बाहर आने का केवल मार्ग था– विकल्प की मौत। इसीलिए जब यहुन्ना बपतिस्मा देने वाले ने यीशु को देखा तो चिल्लाकर कहा, "देखो, यह परमेश्वर का मेम्ना है, जो जगत के पाप उठा ले जाता है।"(यूहन्ना १:२९)

२) दूसरी तसवीर मंडी से है।

परन्तु उसके अनुग्रह से उस छुटकारे के द्‌वारा जो मसीह यीशु में है, सेंत मेंत धर्मी ठहराए जाते हैं। (पद २४)

कर्ज़ आज के समय तक की सीमित समस्या नहीं है, यह समस्या पुराने संसार में भी थी। अगर किसी का बहुत कर्ज़ था, तो उधार चुकाने के लिए उनका केवल एक सहारा था, अपने आपको बेच डाले, या फिर कानून ज़बरदस्ती उनसे गुलामी कराता था। मान लिया जाए कि जब किसी को बेचा जा रहा हो और दाम लगाया जा रहा हो तो उसका मित्र भी उस भीड़ में हो। मान लें कि फिर वह मित्र उसका दाम चुका दे और उस व्यक्ति को स्वतंत्र होकर जाने दे। तो वह उसको मुक्त करा रहा होगा। इसी रीति से यीशु ने छुटकारे का दाम देकर हमें शैतान के पाप की बंधुआई के बाज़ार से छुड़ा लिया है।

ब्रिटेन और फ्राँस के बीच युद्ध के समय पुरुषों को फ्राँस की सेना में अनिवार्य तौर पर बुलाया जाता था एक प्रकार के लॉटरी सिस्टम द्वारा। जब किसी का नाम आता तो उसे युद्ध में जाना पड़ता था। एक मौके पर अधिकारी एक व्यक्ति विशेष के पास आए और उसे बताया कि वह चुने हुओं में से एक है। उसने यह कहते हुए जाने से मना कर दिया, "मुझे दो साल पहले गोली लगी थी और मार दिया गया था।" पहले तो अधिकारीयों ने उसकी समझ पर सवाल उठाया परन्तु उसने ज़ोर दिया कि सचमुच ऐसी ही बात थी। उसने दावा किया कि सेना के अभिलेख दिखाँएगें कि वह सचमुच काम करते हुए मारा गया था। उन्होंने पूछा, "ऐसा कैसे हो सकता है?" "तुम अभी जीवित हो।" उसने समझाया कि पहले जब उसका नाम आया था तो एक घनिष्ठ मित्र ने कहा, "तुम्हारा परिवार बड़ा है लेकिन मैं शादीशुदा नहीं हूँ और कोई मुझ पर निर्भर नहीं है। मैं तुम्हारा नाम और पता ले लूंगा और तुम्हारे बदले चला जाँऊगा।" और सचमुच में रिकॉर्ड यही दिखा रहा था। इस अजीबोगरीब किस्से को नेपोलियन बोनापार्ट को सूचित किया गया जिसने यह निर्णय लिया कि उस व्यक्ति पर देश का कोई कानूनी दावा नहीं है। वह स्वतंत्र था। वह व्यक्ति दूसरे व्यक्ति की मौत से मर गया था।[१]

३) तीसारी तसवीर न्यायालय से है

सेंत मेंत धर्मी ठहराए जाते हैं। (पद २४)

पौलूस 'स्वतंत्र रूप से धर्मी ठहराए गए' शब्दों का इस्तेमाल करता है। न्यायोचित एक कानूनी शब्द है। यदि आप न्यायालय में गए और आपको दोषमुक्त कर दिया गया तो आप सही ठहरे।

दो लोग एक साथ स्कूल और यूनिवर्सिटी गए और उनमें गहरी दोस्ती हो गई। ज़िन्दगी बीतती गई और दोनों अलग – अलग रास्तों पर चल पड़े और संपर्क खो बैठे। एक न्यायधीश बन गया जबकी दूसरा अपराधी। एक दिन अपराधी जज के सामने आया। उसने एक अपराध किया था और उसने वह अपराध स्वीकार कर लिया था। न्यायाधीश ने अपने पुराने मित्र को पहचान लिया और असमंजस में पड़ गया। वह एक जज था तो उसे न्यायी

---

[१] 1500 Illustrations for Biblical Preaching. Edited by Michael Green. Published by Baker Brooks. Page 317

होना ही था; वह उस मनुष्य को ऐसे ही नहीं छोड़ सकता था। दूसरी ओर वह उस मनुष्य को सज़ा नहीं देना चाहता था क्योंकि वह उससे प्रेम करता था। तो उसने अपने मित्र से कहा कि अपराध के लिए वह उस पर उचित जुर्माना लगाएगा। वह है न्याय। तब वह अपने जज के स्थान से नीचे उतर आया और जुर्माने की रकम के लिए चैक काटा। उसने यह कहते हुए कि वह उसके लिए दाम चुकाएगा वह चैक अपने मित्र को दे दिया। वह है प्रेम।

जो परमेश्वर ने हमारे लिए किया, यह उसका एक उद्धारण है। अपने न्याय में वह हमारा न्याय करता है क्योंकि हम दोषी हैं लेकिन फिर अपने प्रेम में, वह अपने पुत्र यीशु मसीह के स्वरूप में आया और हमारे लिए सज़ा का दाम चुकाया।

इस प्रकार से वह न्यायी है (कि दोषी को बिना दण्ड दिए जाने नहीं देता) और वह जो धर्मी ठहराता है रोमियों ३:२६ (कि अपने पुत्र के स्वरूप में होकर अपने ऊपर दण्ड लेकर वह हमें स्वतंत्र करता है)।

जो उद्धारण दिया गया वह तीन कारणों से एकदम सही नहीं है। पहला – हमारी दशा इससे बहुत बुरी है। जिस सज़ा का हम सामना कर रहें हैं वह केवल जुर्माना नहीं है बल्कि मृत्यु है, न केवल शारीरिक मृत्यु बल्कि जीवन के रचयिता से अलगाव – आत्मिक मृत्यु – परेमेश्वर से अलग अनन्तता। दूसरा; संबन्ध नज़दीकी का है। यह केवल दो मित्र नहीं हैं – यह हमारा स्वर्गीय पिता है जो हमें किसी भी सांसारिक माता–पिता से बढ़कर प्रेम करता है। तीसरा – दाम इससे बढ़कर था – इसमें परेमेश्वर का पैसा नहीं लगा बल्कि उसका एकलौता पुत्र – जिसने पाप का दाम चुकाया। यह कोई मासूम तृतीय – पक्ष नहीं है बल्कि स्वयं परमेश्वर है जो हमें बचाता है।

४) चौथी तसवीर घर से है

अर्थात परमेश्वर ने मसीह में होकर अपने साथ संसार का मेल मिलाप कर लिया, और उन के अपराधों का दोष उन पर नहीं लगाया (२ कुरिन्थियों ५:१९)

जो उड़ाऊ पुत्र के साथ हुआ वह हमारे साथ भी हो सकता है (लूका ११:१५–३२) हमारे पाप हमें उससे दूर कर देते हैं जिसने हमें रचा है। परेमेश्वर ने अपने आपसे हमारा मेल–मिलाप कर लिया है और हमारे पापों को हमसे अलग किया है, यदि हम उसके प्रेम और अनुग्रह की भेंट को अपना लें। उसने आपकी जगह ले ली है।

वर्ष १८२९ में जॉर्ज विलसन नाम के फ़िलिडेल्फ़िया के जन ने किसी को जान से मार कर यू०एस० मेल सर्विस को लूट लिया। विलसन पकड़ा गया, मुकदमा चला, वह दोषी पाया गया और उसे फाँसी की सज़ा सुनाई गई। कुछ दोस्तों ने उसके लिए बिचवाई की और अंत में प्रेसिडेंट ऐन्ड्रू जैकसन से उसके लिए क्षमा पाने में सफ़ल हुए। लेकिन जब उसे इस बारे में बताया गया, जॉर्ज विलसन ने क्षमा पाने से मना कर दिया। शासनाधिकारी इस सज़ा को लागू करने के लिए तैयार नहीं थे। एक क्षमा पाए जन को वह कैसे फाँसी पर लटका सकते थे। एक निवेदन प्रेसिडेंट जैकसन को भेजा गया। इस मामने का निर्णय करने के लिए परेशान प्रेसिडेंट ने संयुक्त राज्य अमरीका के उच्चतम न्यायालय का रुख किया। मुख्य न्यायाधीश मार्शल ने यह बात कही कि माफ़ी एक कागज़ का टुकड़ा है जिसका महत्व इस बात पर निर्भर है कि जिस व्यक्ति पर इल्ज़ाम है, वह उसे स्वीकार करे। ऐसा मुश्किल से माना जाता है कि जिस व्यक्ति को मौत की सज़ा मिली हो वह

माफ़ी के लिए मना कर दे लेकिन अगर वह इसे ठुकरा दे तब यह माफ़ी नहीं रहती। जॉर्ज विलसन को फाँसी होनी चाहिए। तो जॉर्ज विलसन को फाँसी दे दी गयी जबकि उसका माफ़ीनामा शासनाधिकारी की मेज़ पर पड़ा था। मुख्य न्यायाधीश – संपूर्ण जगत के ईश्वर द्वारा दी गयी पूर्ण क्षमा के साथ आप क्या करेंगे?

एक अमरीकी पासबान और कलीसीया के अगुवा, जॉन विमबर बताते हैं कि किस प्रकार क्रूस उनके लिए एक व्यक्तिगत सच्चाई बनी –

लगभग तीन महीने के बाइबिल अध्ययन करने के बाद मैं क्रूस पर प्राथमिक परीक्षा पास कर लेता। मैं समझ गया था कि परेमेश्वर है जिसको तीन व्यक्ति के रूप में जाना जा सकता है। मैं समझ गया कि यीशु पूरी तरह से परमेश्वर और पूरी तरह से मानव है और वह संसार के पापों के लिए क्रूस पर मर गया। पर मैं यह नहीं समझा कि मै एक पापी हूँ। मैं सोचता था कि मैं एक अच्छा व्यक्ति हूँ। मैं जानता था कि मैं थोड़ा यहाँ – थोड़ा वहाँ गड़बड़ कर देता था पर मैं यह नहीं जानता था कि मेरी दशा कितनी गंभीर थी। पर एक शाम इस दौरान, कैरोल (उनकी पत्नी) ने कहा, "मैं समझती हूँ कि जो कुछ हम सीखते आए हैं, अब उस बारे में कुछ करने का समय है।" तब जब मैं पूर्ण आश्चर्य से देख रहा था, वह घुटनों पर बैठी और उससे प्रार्थना करने लगी जो मुझे छत का पलस्तर प्रतीत हुआ। उसने कहा "हे परमेश्वर, मैं अपने पापों के लिए क्षमा माँगती हूँ।" मैं इस बात पर यकीन न कर सका। कैरोल मुझसे अच्छी इनसान थी फिर भी वह सोचती थी कि वह पापी है। मैं उसके दर्द और उसकी प्रार्थना की गहराईयों को महसूस कर सकता था। जल्द ही वह रोने लगी और दोहराने लगी "मै अपनी गलती के लिए क्षमा माँगती हूँ।" कमरे में छह या सात लोग बैठे थे, सभी की आँखे बन्द थीं। मैंने उनकी ओर देखा और तब मुझे लगा वह सभी यह प्रार्थना कर चुके हैं। मेरे पसीने छूटने लगे। मुझे लगा मैं मरने वाला हूँ। मेरे चेहरे से पसीना बहने लगा और मैंने सोचा "मैं यह नहीं करूँगा। यह तो बेवकूफ़ी है। मैं एक अच्छा जन हूँ।" तब मुझे समझ आया कैरोल पलस्तर से प्रार्थना नहीं कर रही थी वह एक व्यक्ति से प्रार्थना कर रही थी, एक ईश्वर से जो उसको सुन सकता था। उसकी तुलना में वह जानती थी कि वह एक पापी है जिसको क्षमा की आवश्यकता है। उसी क्षण क्रूस के मेरे लिए व्यक्तिगत मायने हो गए। अचानक से मैंने कुछ जाना जो मैंने पहले कभी नहीं जाना था। मैंने परमेश्वर की भावनाओं को चोट पहुँचाया था। वह मुझसे प्रेम करता था और मेरे लिए अपने प्रेम की खातिर उसने यीशु को भेजा था लेकिन मैंने उस प्रेम से मुँह फेर लिया। अपने पूरे जीवन मैंने उसका तिरस्कार किया था। मैं एक पापी था जिसको क्रूस की बेहद आवश्यकता थी।

तब मैं भी घुटनों पर फ़र्श पर था, सिसकता हुआ, नाक बहती हुई, आँखों से पानी बहता हुआ और मेरे पूरे शरीर से बहुत पसीना बह रहा था। मुझे अत्याधिक तीव्रता से ज्ञात हुआ कि मैं किसी से बात कर रहा था जो मेरे पूरे जीवनभर मेरे साथ था लेकिन जिसे पहचानने में मैं असफ़ल रहा। कैरोल की तरह मैं जीवित परमेश्वर से बातें करने लगा उसको यह बताते हुए कि मैं पापी था लेकिन जो शब्द मैं ज़ोर से कह पा रहा था वह केवल यह थे, "हे परमेश्वर, हे परमेश्वर।" मैं जानता था कि कुछ परिवर्तनवादी चीज़ मेरे अन्दर चल रही थी। मैंने सोचा, "मैं आशा करता हूँ कि यह काम करे, क्योंकि मैं अपने आपको बड़ा मूर्ख बना रहा हूँ।" तब प्रभु ने मुझे एक व्यक्ति की याद दिलाई जिसको मैंने कई साल पहले लॉस ऐन्जलिस के पेरिशिंग स्कवेर में देखा था। उसने एक चिहन पहना हुआ था जिसमें लिखा था, "मैं मसीह का मूर्ख हूँ। तुम किसके मूर्ख हो?" उस समय मैंने सोचा, "यह तो सबसे बड़ी बेवकूफ़ी भरी बात है जो मैंने अब तक देखी।" पर जैसे मैं फ़र्श पर घुटनों के बल आया मुझे उस अजीब से निशान का सच समझ में आया – जो नाश हो रहे हैं उनके लिए

क्रूस मूर्खता है।" (१ कुरिन्थियों १:१८) उस रात मैं क्रूस के पास घुटनों पर आया और यीशु में विश्वास किया। तब से मैं मसीह का मूर्ख हूँ।

प्रार्थना – स्वर्गीय पिता, जो बातें मैंने अपने जीवन में गलत की हैं मैं उनके लिए क्षमा माँगता हूँ। (कुछ क्षण लेकर अपनी अन्तरातमा में जो बातें हैं उनके लिए क्षमा माँगें) कृप्या मुझे क्षमा कर। मैं अब हर उस बात से फिराता हूँ जो मैं जानता हूँ कि गलत हैं। तेरा धन्यवाद हो कि तूने अपने पुत्र यीशु को मेरे लिए क्रूस पर मरने भेजा ताकि मैं क्षमा पाऊँ और आज़ाद हो सकूँ। अब से मैं तेरे पीछे चलूँगा और तुझे अपना प्रभू मानकर तेरी आज्ञा मानूँगा। मैं तेरा धन्यवाद करता हूँ तेरी क्षमा के वरदान और तेरे पवित्र आत्मा के लिए जो तूने मुझे दिया है। मैं अब उस उपहार को ग्रहण करता हूँ। अपने पवित्र आत्मा के द्वारा हमेशा के लिए मेरे जीवन में आ। हमारे प्रभु यीशु मसीह के द्वारा, आमीन॥